अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

रांगेय राघव के नारी पात्रों का सामाजिक परिदृश्य

शोधकर्ता-अंकिता वशिष्ठ
महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय भरतपुर
शोध निर्देशक-डॉ. इन्दु प्रकाश (सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर हिन्दी)
राज. कन्या महाविद्यालय धौलपुर
महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय भरतपुर

सार

डॉ. रांगेय राघव अनेक साहित्यिक गुणों के धनी महान लेखक हैं। डॉ. रांगेय राघव जन्म से हिन्दी भाषी नहीं हैं, लेकिन उन्होंने अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्ध और संवर्धित किया है। उनके पास अनेक साहित्यिक कृतियाँ हैं। वे 'डॉ. रांगेय राघव के साहित्यकार' बन चुके हैं। डॉ. रांगेय राघव की चित्रकला सम्यक और संतुलित है। उसमें न तो आदर्शवाद है, न ही नया अर्थ। उनकी चित्रकला और उनके पत्रों के ऐसे चित्र सजीव और रोचक हैं। उनका हर दृष्टिकोण अनुभव से भरा है। परिणामस्वरूप उन्होंने जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान किया है। अत: उनका मुख्य उद्देश्य अपने पत्रों की समस्याओं का अध्ययन कर उन्हें समाज के सामने प्रस्तुत करना और अपने विचार व्यक्त करना रहा है। यह एक शोध का विषय है। प्रथम वक्ता डॉ. रांगेय राघव थे। यह डॉ. रांगेय राघव के जीवन और कार्यों से संबंधित है। इसे लिखते समय डॉ. रांगेय राघव के जीवन से संबंधित उपलब्ध मूल स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसी प्रकार डॉ. रांगेय राघव की हत्या पर लिखे गए शोध कार्यों और अन्य आलोचनात्मक पुस्तकों का भी अध्ययन किया गया है। डॉ. रांगेय राघव के इतिहास और कार्यों से संबंधित लेख व्यावहारिक दृष्टिकोण और सत्य दृष्टिकोण से विषय का विश्लेषण है। यह हर दृष्टिकोण से अनुभव से भरा है। परिणामस्वरूप, उन्होंने जीवन की कई समस्याओं का समाधान किया है। इसलिए, उनका मुख्य उद्देश्य अपने पाठकों की समस्याओं का अध्ययन करना और उन्हें प्रस्तुत करके समस्या का समाधान बताना रहा है। उनके धार्मिक संस्कारों की कमी के कारण, उन्हें पारंपरिक और धार्मिक ग्रंथों की श्रेणी में भी नहीं रखा गया है। इसलिए, ये सभी नए देवता अपने-अपने विशेष गुणों से जुड़े हुए हैं। उत्पाद के महत्वपूर्ण रूप, प्रमुख और छोटे हिस्से। पारिवारिक संबंध की दृष्टि से, माँ, बहन, भाई। सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण आंकड़े पति, प्रेमी, वेश्या, मालकिन आदि हैं। इन पात्रों में कई प्रकार के चरित्र और चित्रण के रूप हैं। ये पात्र युवा, युवा, परिपक्व, बूढ़े आदि की स्थिति को दर्शाते हैं। इस प्रकार के अविवाहित, अविवाहित, शहरी, ग्रामीण, कानूनी समुदायों के साथ-साथ उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग के समुदायों के पात्र हैं।

मूलशब्द रांगेय राघव के नारी पात्र, सामाजिक परिदृश्य

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

परिचय

न ही प्रकृति का स्वरूप है, प्रकृति परम पुरुष की इच्छा का परिणाम है। यह सर्वविदित है कि जब व्यक्ति किसी कार्य को करते-करते ऊब जाता है तो अपनी इच्छा से कार्य करते-करते वह एक से दो हो जाता है। इस प्रकार प्रकृति की सुन्दर रचना पुरुष की पूरक है। न ही के बिना सम्पूर्ण सृष्टि का सच्चा प्रकाश अनुभव नहीं किया जा सकता। न ही के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। न ही के साहचर्य से ही संस्कृति बढ़ती है और न ही पुरुष की प्रेरणा है। न ही न ही के शरीर की सुन्दरता पुरुष को आकर्षित करती है, यदि पुरुष अपनी शारीरिक आवश्यकता से संतुष्ट है तो न ही के शरीर की अहंमय सुन्दरता भी पुरुष के लिए प्रेरणा बन जाती है। वह आनंद के क्षणों में पुरुष की संगिनी होती है, दुख में उसका हृदय साथी होता है और वह उसके कार्यों में सहभागी होती है।

चेतना का अर्थ प्रकृति की समझ या ज्ञान, मानसिकता है, जिसका संबंध जीवन-दृष्टि से है। जीवन-दृष्टि वह सार है, जिसका स्वरूप अच्छा-बुरा, अनुकूल-प्रतिकूल, सही-गलत आदि की समझ और द्वन्द्व से मुक्त है। अच्छा-बुरा, सही-गलत आदि का द्वन्द्व ही सत्य स्थिति का विरोध और नवीन बोध है। चेतन शब्द चेतना+न् (प्रत्यय) से बना है। इसका कुल अर्थ है- बुद्धि, मन, ज्ञान, क्रियाशील मन, स्मृति, प्रसन्नता, स्मृति, चेतना, जागरूकता, अनुभूति। आंतरिक अनुभूति, विवेक जिसे स्वीकार कर लिया जाता है। ध्यान न देना। ध्यान देना, सचेत आवाज देना, कुछ न करना। चेतना का संबंध मनुष्य के मन से है, जिसके कारण वह स्वयं गलत के विरुद्ध कार्यवाही करता है। वह अपने आचार-विचार और कर्तव्यों के प्रति सजगता के साथ क्रियाशील रहता है।

रांगेय राघव के नारी पात्र

इतिहास और कथा भिन्न-भिन्न प्रकार की अनुभूतियाँ हैं तथा अतुलनीय हैं। इतिहास दुःख और प्रेम हमें भोजन के पंखों पर सवार होकर अतीत में ले जाते हैं और कथा हमें कल्पना के पंखों पर सवार होकर अतीत के सम्मुख खड़ा कर देती है। इतिहास हमारे अपने संसार में कथा इतिहास पर है। हम अहाता:स को नहीं समझ सकते, हम उस घाव को देख सकते हैं जो इतिहास के आदि से अंत तक फैला हुआ है, तथा जिसने लाखों लोगों को अपनी कथा का विषय बनाया है, पर यह निश्चित है कि यह भारत का अहाता:स नहीं है। हम भारत की आंतरिक कथा को ऐसे नहीं समझ सकते। यह कल्पना से जन्मा संसार है। इसमें अहाता:स

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

की खोज करना व्यर्थ है। ' इतिहास' को वीर भाव बनाये बिना वीर भाव नहीं हो सकता। किसी भी अन्य विचार की तरह इसमें भी महत्वपूर्ण बातें हैं - लेखक की परिपक्व दृष्टि, लेखक का दृष्टिकोण, सम्पूर्ण समाज और विशेषकर समाज के दबे-कुचले वर्गों, महिलाओं और दलितों के प्रति लेखक का दृष्टिकोण, सामाजिक आर्थिक व्यवस्था और ईसा के जीवन का मूल्यांकन करने की दृष्टि, समय की गति को समझने की क्षमता, शास्त्रों की कठिन परीक्षा, शास्त्रों के बारे में चिंतन, गणतंत्र में लोकतंत्र, गणतंत्र में समाज जैसे मूलभूत मुद्दे आदि, जिन्हें लेखक ने बखूबी उठाया है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर और ईश्वर के बीच केवल अनन्तता है, आकाश में अ-सृष्टि है और सर्वशक्तिमान सर्वव्यापी है। कभी बोलकर, कभी सूक्ष्म रूप में, तो कभी प्रच्छन्न रूप में, वह अपनी बात अवश्य कहता है।"

' यशोधरा जीत गए' के बुद्ध ने जहां नौ देवताओं के दुख दूर करने के लिए अपने प्राकृतिक सुख-विलास त्याग दिए थे, वहीं 'धूनी का धुआं' के गोरख ने स्त्रियों की कामवासना रोककर उनकी प्रेम शक्ति को बढ़ाया और समाज से व्यभिचार को दूर किया। गोरख धरती के खिलाफ खड़े हुए और उन्होंने जीवन-मरण के मामले में सभी मनुष्यों को समान नहीं माना, यह बात हिंदू और मुसलमान दोनों ने देखी।

स्त्री-पुरुष संबंध, समाज में स्त्री की स्थिति तथा स्त्री स्वतंत्रता की खूब चर्चा होती है। 'अंधेरेक जुगनू' की बृहद्वती स्त्री सम्मान तथा स्वतंत्रता की प्रतीक है। 'चीवर' की पूरी कहानी स्त्री सम्मान के इर्द-गिर्द घूमती है। जयश्री सम्यक् भाव से कहती है कि - ''जो कुछ है, वह पुरुषों की इच्छा है, पुरुष उसे कहते हैं। स्त्रियां ही धन हैं। स्त्रियों के अधिकार में कुछ भी नहीं है। जयश्री के ये देवता स्त्री के देवता हैं तथा वह स्वयं को स्थापित करती रहती है तथा चीवर धारण कर बड़े चाव से चलती है। वह पुरुषों का पक्ष लेती है तथा उनकी रक्षक बनकर पुरुषों के अहंकार तथा युद्ध योजना का विरोध करती है। अंत में हर्षवर्धन भी उसकी हंसी-मजाक की नीतियों से सहमत होकर हंसी का त्याग कर चीवर धारण कर लेता है। इस कहानी में स्त्री के व्यभिचार को नेतृत्व न देकर वह अपनी दूरदर्शी दृष्टि का भी परिचय दे सकता है। डॉ. राघव ने अपनी कहानियों में न केवल रजनी के बोल सुने हैं, बल्कि अमर जनता की पुकार भी आसमान में गूंजती है। जब भी जनता की जरूरत होती है, जब भी जनता के अधिकारों पर हमला होता है, जब भी सत्ता क्रूर होने की कोशिश करती है, तब जनता दहाड़ती है और गर्व से भर उठती है। 'मुर्दो का टीला' और 'अंधेरे जुगनू' में जनता के

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

विद्रोह का चित्रण बहुत ही वास्तविक और सजीव तरीके से किया गया है। यह जनता का है और जनता के प्रति डॉ. राघव की आस्था और विश्वास का प्रतीक है।

नारी पात्रों का सामाजिक परिदृश्य

गीत और घाव के साथ हत्या में मुख्य महिला पात्र:- लौंग, गुलाब, सुरील, हमशाल, नीलूफर, महलक, सुभद्रा, वसाहत, देवकी, भाई, सुरील, लक्ष्मी, प्यारी, हविद्या, ले.

डॉ रांगेय राघव के जीवनी परक उपन्यासों में माँ रूप में नारी चरित्र

जब से मुझे इस बारे में पता चला है, मुझे कभी भी ऐसी बुरी आदत महसूस नहीं हुई। मैं भारत का बेटा हूँ और मैं उससे डरना नहीं चाहता। जब से मुझे इस बारे में पता चला है, मुझे कभी भी ऐसी बुरी आदत महसूस नहीं हुई।

पत्नी

स्त्री पुरुष की पूरक है। स्त्री के बिना पुरुष और स्त्री का अस्तित्व अधूरा है। सभी रिश्तों में पूर्ण रिश्ता सबसे ऊंचा और सच्चा होता है। पत्नी बनने से पहले यह जरूरी है कि स्त्री पुरुष की पति या पत्नी बनकर अपने सभी कर्तव्यों का पालन करे। स्त्री को वही संतुष्टि मिलती है और उसके जीवन की ताकत इसी में निहित है।

पत्नी पति का सहयोग लेती है। पत्नी उसके कर्तव्यों को पूरा करने में उसकी मदद करती है। पत्नी पति का पूर्ण सहयोग करके जीवन को रोचक बनाती है। पत्नी का जीवन जीवन से भरा हुआ होता है। एक ओर वह परिवार के सदस्यों की खुशी और खुशहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, वहीं दूसरी ओर वह समाज की परंपराओं और व्यवस्थाओं के साथ समन्वय भी बनाए रखती है। पत्नी का रिश्ता दिल की गहराई से महसूस किया जाता है। सहनशीलता के कारण वह परिवार में आने वाली समस्याओं से लड़ती है और पति को ईश्वरीय उन्नति के मार्ग पर ले जाती है। भारत में पत्नी हमेशा पति धर्म का पालन करते हुए उसे अपना प्यार देती है। जीवन में पुरुष की उसके प्रति वफादारी ही उसका धर्म है। ऐसी स्थिति में एक पत्नी परंपरा के अनुसार अपने पति के लिए अपनी कुर्बानी देती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

पत्नी हमेशा पति की नासमझी का रोल अदा करती है। पति अगर उसका साथ दे भी दे तो भी वह पति पर बड़ी से बड़ी चोट करने से कतराती है। पति के कंधे से कंधा मिलाकर वार करती हुई पत्नी पूरे विश्व और राष्ट्र के कल्याण में लगी रहती है और मातृभूमि की प्रज्वलित प्रेमा होती है। अगर बर्दाश्त की हदें पार हो जाएं तो वह इस तरह फट भी सकती है कि पुरुष देखता रह जाए। लेकिन पत्नी श्रद्धा के खातिर अपनी भावनाओं को खुद से साझा न करके हर संभव कोशिश करती रहती है।

पुत्री - बहन

बेटी से नया जीवन शुरू होता है। बहू अनेक भूमिकाओं से गुजरती है, मातृत्व का जीवन जीती है। असली अस्तित्व बेटी से शुरू होता है। हिंदू समाज में बहन, बेटी का विशेष महत्व है। बहन शब्द कहते ही एक वात्सल्य की भावना उत्पन्न हो जाती है। आदर्श बहन का अपना अर्थ होता है: आत्म-प्रेम। हिंदू त्योहारों में रक्षा बंधन और भावना दशहरा राशि प्रेम के प्रतीक हैं। विशेष त्योहारों के माध्यम से बहन के प्रति प्रेम के महत्व पर बल दिया जाता है। भारतीय त्योहारों में बहन के प्रति प्रेम को सच्चा प्यार माना जाता है। बहन पाकर गर्व महसूस करना एक भाई भी बहन बन सकता है। एक बहन की देखभाल की जिम्मेदारी एक ही है। उसके सामने एक योग्य घर की खुशियां और पूरा जीवन और पति की रक्षक है। बहन असीम प्रेम और धैर्य का स्रोत है

जीवन में सबसे पहली चीज बहन है। बहन का सम्मान जीवन भर निभाया जाता है। बचपन से लेकर जवानी तक उसका साथ और उसकी रक्षा का आनंद मिलता है। उसके बाद माँ और पिता बनकर उसे और भी अधिक सम्मान मिलता है। किसी भी गाँव या शहर में वह और उसका पति शादी करके अपनी इच्छानुसार नए दोस्त बनाकर मौज-मस्ती करते हैं। बहन भी हमेशा उसकी शुभकामनाओं का ध्यान रखती है और उसकी भरपूर मदद करती है। उसके प्रयासों में भी वह खुद को असहाय महसूस करती है। बहन भी हमेशा उसे अच्छी बातें कहना चाहती है। इस वजह से वह यह भी जानना चाहती है कि उसे अपने ही परिवार से क्यों संघर्ष करना पड़ रहा है।

बहन-बहन का रिश्ता भी हमारे बीच बहुत प्यार और स्नेह से भरा होता है। बहनें अक्सर आपसी सुख-दुख का अनुभव करके और एक-दूसरे की मदद करके जीवन को और अधिक खुशहाल बनाने की कोशिश करती हैं। पूरे परिवार का हिस्सा न होते हुए भी वे एक-दूसरे की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

शारीरिक समस्याओं को अधिक सचेत और सहजता से अनुभव करती हैं। वे वास्तविक समस्याओं में भी मदद करने के लिए तैयार रहती हैं और बड़ी बहन के दृष्टिकोण से एक सक्षम मार्गदर्शक भी साबित होती हैं। स्नेह, समर्पण और समझदारी आपके रिश्ते की ताकत हैं।

सास बहु

हर रिश्ते में जगह का बहुत महत्व होता है। सामंजस्यपूर्ण परिवारों में घर की खुशहाली और समृद्धि रिश्तों पर निर्भर करती है। अगर दोनों लोगों के रिश्ते मधुर हैं तो घर स्वर्ग बन जाता है जबकि अगर घर में झगड़ा होता है तो घर हमेशा के लिए अमर हो जाता है। सामंजस्यपूर्ण परिवारों के टूटने का पूरा कारण रिश्तों पर ही निर्भर करता है।

कुछ अपवादों को छोड़ दें तो मैं अपने पति के कल्याण में रुचि रखती आई हूँ। इसका वास्तविक कर्तव्य है कि मैं अपने जीवनसाथी की उसी तरह सेवा करूँ। जब कभी बेटी की खुशी पेट में दर्द की तरह महसूस होगी, तब रिश्ते का गौरव मुझे भी महसूस होगा। इसका कर्तव्य केवल परिवार के सदस्यों को धन देना ही नहीं है। पति के स्वरूप का गुणगान करते हुए दया और गर्व के साथ पति की सेवा करना भी है।

सास का हमारे साथ बहुत महत्व है। यह एक निंदनीय प्रथा है जो हमें संदेह और घृणा की नज़रों से देखती है और खुद को फ़ायदा पहुँचाने की ताकत रखती है। सेक्स पूरे परिवार को पूरी समझदारी के साथ एक सूत्र में पिरोता है। यह सभी के साथ बराबरी का रिश्ता रखकर पूरे परिवार की खुशियाँ बढ़ाने की ताकत रखता है। रिश्तों की गर्माहट का नैतिक सार बच्चे में ही पैदा होता है।

लेकिन महान भारतीय लोग मानवाधिकार, परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से लाभान्वित होते हैं। फिर, महान भारतीय लोग लोगों के सहयोग को भी अधिक महत्व देते हैं। यह मानवाधिकारों में भी स्पष्ट है। डॉ. रांगर राघव की जीवनी पर कई निबंधों में, ऐसे कई रूपों को अलग-अलग जगहों पर दर्शाया गया है।

सिद्ध जब युद्ध जीतकर घर से चला जाता है तो उस स्त्री का पति गौतम युद्ध के लिए किसकी सहायता लेगा। उसके पागल जीवन का वर्णन करते हुए वह कहती है कि, वह स्त्री

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

बहुत झूठ बोलती है। उसने आसन और सुख त्याग दिए हैं। वह बिस्तर छोड़कर बिस्तर पर सोती है। वह शराब नहीं पीती, बल्कि आराम से खाना खाती है।

नन्द-भाभी

भारतीय लोगों में नंदा भक्ति संबंध को लेकर काफी नाराजगी है और इसमें काफी स्वाभाविक आत्मीयता भी है। पहली बहन की पहली बहन कोंडाना है। 'नंदा शब्द एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है 'धन बचाना' लेकिन फिर भी यह शब्द लोगों को पसंद नहीं है।

न नन्दहतकृत च महपसेव य ननतुष्यहत।

इस कारण यह आवाज निकलती रहती है कि प्रेम में भी नंदा संसार से असंतुष्ट रहती है। नंदा के बुरे संयम के कारण कितनी ही बेटियों का जीवन नरक बन जाता है। वहीं जब वह अध्यात्म के लिए अपने प्राण त्याग देती है तो नंदा का जीवन पूर्ण हो जाता है। तब भी प्रिया नंदा का व्यवहार कठोर व्यवहार करते देखा गया है। लेकिन प्रेम में लोगों के बीच संबंधों का महत्व बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण है। जहां सिर्फ दो दुनियाओं का ही संबंध नहीं होता बल्कि कई जिंदगियां भी उनसे जुड़ी होती हैं।

यदि किसी व्यक्ति के हृदय में नन्दा के प्रति प्रेम है तो नन्दा भी ऐसे बच्चों की सहायता से अपने प्रेम को मित्रता के रूप में व्यक्त कर सकती है। तभी बच्चों के प्रेम और स्नेह को महसूस किया जा सकता है। बच्चे के रूप में ही अधिकाधिक लोगों की सचेतन और बढ़ी हुई सोच की सहायता से ऐसे सम्बन्ध बन सकते हैं। समन्वय और सहयोग भी सच्ची मित्रता सिद्ध हो सकती है। परिवार की प्रक्रिया में बच्चों का मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण होता है। बिग बी भी युवा नन्दकोकुम्भज की सहायता से महत्वपूर्ण और सार्थक कीर्ति करने की शक्ति रखते हैं। डॉ. रांगेय राघव ग़ज़ल की जीवनीपरक कृतियों में नन्द-भगवान के अनेक रूप भी विशेष उल्लेख के पात्र हैं।

भारत के दामाद में दो पात्रों मुकुंदी और गोविंदभाई ने नंदा की भूमिका निभाई है। लेकिन जीवन में उनका भाग्य अच्छा नहीं रहा और शुरू से अंत तक उन्हें दुख पर दुख झेलना पड़ा। लेखक ने मुकुंदी के चरित्र का वर्णन करते हुए कहा है कि, "गोकुलचंद्र चला गया था और जब वह लौटा तो उसके साथ विधवा मुकुंदी थी। वह और वैभव हमारे थे। वह अपने संरक्षक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

के घर लौट गई, जहाँ वह आँखों में आँसू लिए बैठी थी। मैं उसके पास गया और एक-दूसरे को गले लगाने के बाद हम फिर बैठ गए।

मेरे भाई की पत्नी सुरील भी हर पहलू में एक नौकर की भूमिका निभाती है। वह आंके (नौकर) के साथ निकटता से रहती है और उनके अपने देवर के साथ भी उनका मधुर संबंध है। जब आंके बूढ़ी हुई, तो उसके पति और रसूरी ईसा के बारे में सोचने लगे। आंके बूढ़ा हो गया था। मुझे सपने में देखकर ईसा को कई चीजों का ज्ञान हो गया था। तो, क्या वह बूढ़ा था? यह देखकर सचमुच सुरील को भी ज्ञान हो गया। हनरंजन कृष्ण ने कहा। उसे सच्चाई समझ में आ गई। सुरील को यह बात अच्छी लगी। उसका एक बेटा हुआ। वह वास्तविकता से खुश हो गया। सुरील को बहुत गुस्सा आया। वह दृश्य से खुश हो गया। उसने कोई अच्छा काम नहीं किया था, वह खुश हो गया।

नारी का बहुप रूप

स्थिर रूप

स्थिर सौन्दर्य का अर्थ केवल आँखों के वर्णन से ही नहीं बल्कि शरीर के सौन्दर्य से भी है। सौन्दर्य के वर्णन में चेहरे से लेकर पैरों तक का उल्लेख है। न चेहरा, न आँखें, माथा, भौंहें, नयन, गाल, कंधे, नयन, हाथ, हथेलियाँ, इरोस, भुजाएँ, हाथ, कंधे, स्तम्भ, जाँघ, पैर, पैर के नाखून सभी स्थिर रूपों का चित्रण है। वास्तव में सौन्दर्य का वास्तविक रूप स्थिर रूपों जैसा ही रहता है।

डॉ. रांगेय राघव ग़ज़ल की जीवनी इतनी अधिक है कि पाठकों के लिए कुछ पृष्ठों में सचित्र रूपों का वर्णन करना संभव नहीं है। फिर भी हम प्रार्थना करते हैं कि आप कुछ पृष्ठों में सचित्र रूपों का सफलतापूर्वक वर्णन कर सकें।

युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात गाजीजी ने अपने शब्दों से एक और ऐसा रूपक चित्रण किया है कि, "तब सुन्दर पायल की झंकार बजने लगती, फिर उठते कूल्हों पर शब्द उच्चारित होने लगते, परियों के होठ नाचने लगते, सुन्दरियों के होठों पर मुस्कान फैल जाती, मन्दिर गिरने लगते, उनकी लहरों की ध्वनि समुद्र की गहराई में डूब जाती और समुद्र में रोमांच उत्पन्न हो जाता।"

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

इस सुन्दर गौतम की सुन्दरता का चित्रण इतना सुन्दर है कि, गौर वर्ण वाले गौतम ने अपनी लाल आँखों में गहरे लाल रंग के चित्र बनाए हुए थे। उनकी धनुषाकार भौहें और पतले होठों पर सौम्यता थी, जो त्रिदेवों के होने के बावजूद भी उन्हें अपना सा बना रही थी।

"लोगों ने अपने चेहरों पर ऐसी तस्वीरें देखकर ऐसा काम किया कि उनकी आँखों में खुशी के दीप जल उठे कि दुनिया के अंधेरे में एक जीवंत रोशनी जल उठी, मानो नीली लहरों के बीच एक प्रकाश की किरण प्रकाश स्तंभ के अंधेरे को भेद रही हो।

भरत पुत्र के हृदय ने अपनी पत्नी का चित्र देखकर उसे इस प्रकार संजोकर रख लिया है कि यौवन की अवर्णनीय अभिलाषाएं, स्त्रियों की वासनाएं, वह सब स्वप्न बन गई हैं, उनके चिह्न भी मेरे मन में धूलि के समान अभी तक विद्यमान हैं, पर अतीत की कोई स्मृति नहीं है, यह अलग बात है जिससे जीवन का सार निकलता है।

लख्म की आँखें बड़ी उत्सुकता से चित्र को देख रही थीं, "ओह! मैं इस संसार में बहुत सुखी महसूस कर रही हूँ! और ग्यारहवें पहर वह अपने पति के साथ अपने स्तनों पर दुपट्टा बाँधकर सोती है। यह कोई सुखद स्वप्न नहीं है।"

मेरे ईश्वर ने पूरे मन से चाँद का ऐसा सुन्दर चित्र बनाया है कि उसकी रूपरेखा, नीला काढ़ा और अन्दर लिखकर चुपचाप उसके बगल में बैठे व्यक्ति का मृग-सदृश मन एक सटीक चाल चल देता है। चाँद की रेकी जब गहरी साँस लेती है तो उसके श्वेत रंग का नामोनिशान नहीं रहता। ऐसा लगता है मानो चाँद की किरणें और विद्युत क्षेत्र चमक रहे हों। जब उसकी नाक की गहरी झूलती हुई रोशनी उसके कोमल धुँधलेपन से निकलती है तो ऐसी भव्यता होती है मानो कल्पवृक्ष कीट अपने पत्तों को गरम हाथों में लहरा रहा हो। जब वह गहरी साँस लेकर सिरहाने बैठे व्यक्ति के सिर को छूता है तो ऐसा लगता है मानो सुयश ने लोगों के बीच खड़े-खड़े बड़ी हिम्मत से दिल पर एक तमाचा जड़ दिया हो।

तूफ़ान की आवाज़ ने महारानी की खूबसूरती की तस्वीर को इस तरह से पकड़ लिया था कि एक तितली ने महारानी के खूबसूरत चेहरे पर नज़र डाली। दूर-दूर तक पक्षी उड़ रहे थे और दूर-दूर तक मंदिर में घंटियाँ बज रही थीं। वह बड़ी श्रद्धा से उनसे प्रार्थना कर रही थी और अभिव्यक्त प्रगति जल्द ही एक गंभीर मामले में बदल गई। वह बिस्तर पर बैठी थी।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

यह कहा जा सकता है कि शरीर के वर्णन में शरीर की सुंदरता का विस्तार से वर्णन किया गया है। शरीर में, सुंदरता अपने आप में हर संदर्भ में मौजूद और दृश्यमान है। जैसा कि हमने पहले कहा है कि शरीर की सुंदरता अमीरों के शरीर के अंगों और अंगों से होती है। और एक महिला की सुंदरता का वर्णन करते समय, अमीरों ने उसके शरीर के सभी अंगों का वर्णन किया है। आयुर्वेद के अध्ययन से पता चलता है कि कुछ लोगों की आंखें बड़ी होती हैं, सीधा, संकीर्ण और सुडौल चेहरा होता है, सांवला रंग, गोल चेहरा, लंबी लाल भौंहें, आम का पेड़ शरीर को बहुत प्रिय होता है। शरीर के अंगों के वर्णन में, उनके मुख्य गुण जैसे कि भलाई, सुगंध, कोमलता, सौम्यता, पवित्रता, शांति, सुंदरता, उन्नति, लालित्य, चमक, रंग, कभी-कभी सबसे अप्रिय भी बताया गया है। वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि शरीर के रूप ने स्वयं ही सार को संरक्षित किया है, जिसमें किसी भी चीज के लिए कोई जगह नहीं है जिसे अश्लील कहा जा सके।

गहरा रूप (नारी सौंदर्य)

मन में बसे वन, उनकी अभिव्यक्ति प्रकृति के गहन सौंदर्य के अंतर्गत आती है। दूसरे शब्दों में प्रकृति के गहन सौंदर्य को रूप कहते हैं। अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के वन मन में निरंतर बसते रहते हैं, लेकिन रूप के अंतर्गत बसे उत्कृष्ट वन, उनकी अभिव्यक्ति ही हमारे वर्णन का विषय है।

इसे भी माता की सजग भावनाओं का उदाहरण इस प्रकार देखा गया है, "जाट जिस वीरांगना की पूजा करते हैं, वह स्त्री है। घाव के बाद जंगल की लम्बी राह पकड़ने वाली वैदेही भी स्त्री थी...पन्ना का दूध पिलाने वाले पति को ही स्त्री की सहनशीलता पर भरोसा नहीं है तो स्त्री क्या कर सकती है? स्त्री केवल सुख, संपत्ति और साधुता के लिए पुरुष की संगिनी होती है।" स्त्री को स्त्री के रूप में प्रस्तुत करके स्त्री को इस प्रकार चित्रित किया गया है कि, "जब तक लड़की पति की आज्ञा का पालन कर रही थी, अब यदि पति अकेला है तो तुम मेरी स्वामिनी हो। कल तुम मेरी स्वामिनी होओगी। जैसे जीवन इच्छा पर जलने और मरने की अनुमति देता है, वैसे ही इच्छा के आगे जीने की अनुमति भी देता है, स्वामी।" महेंदर नी की प्रस्तुति चुनौती बनकर नहीं रह जाती और अपने परिचय को मुक्त रूप प्रदान करती है।

' मुर्दों की टीला ' की नायिका एक खूबसूरत प्राच्य महिला है। इसी कारण वह पाणि के रूप में महाबंध की प्रेमिका बन जाती है। नृत्य नृत्य है, बौद्ध धर्म नहीं। वीनी के प्रेम के कारण

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

उसे महाबंध का प्रेम पसंद नहीं आता, इसलिए ईश्वर में प्रेम का जन्म होता है। वह वीनी के प्रेमी हहलभटूर की ओर आकर्षित होती है और अंततः उसका दिल जीत लेती है। उसका चरित्र रात के दौरान कई घटनाओं और मुठभेड़ों के माध्यम से घटित होता है।

'मृत शरीरों का टीला' सत्य और असत्य के बीच का चित्रण करता है। आत्मा का गला घोंटकर हत्या की जाती है, जिसके आगे प्रकृति स्वयं बलिदान हो जाती है। इस तत्व का मंडप मोहनजोदाड़ो के अज्ञात सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की पृष्ठभूमि पर बनाया गया है। इस प्रकार जब मनुष्य सत्य के मध्य रहता है, तो वह जीवन रूपी सागर में विलीन हो जाता है। मूलतः यह महाबन्ध के पतन की कथा है। इस प्रकार महाभारत केवल महानगर की भाँति जीवन से मुक्ति पा सकता है, किन्तु महाबन्ध धन और सूर्य के लोभ में गले तक डूबकर परी बन गया। महाबन्ध, हनलुफर, वाइन, विनीत आपस में गोल-गोल घूम रहे हैं। महाबन्ध वक्र है, विनीत सरल तथा प्रेम और भक्ति से भरा है, विनीत ईसा के हृदय में डूब रहा है। हाँ, महाबन्ध और विनीत जीवन का अंग बन जाते हैं, किन्तु इतनी बातें करने पर भी कथा विकृत नहीं हुई है। 'रह न रुकी' महाराज की पुत्री वसुमत के जीवन संघर्ष की कथा है, जो अनेक परिस्थितियों का सामना करती है। अपने सत्य के लिए संघर्ष करने वाली वसुधा की कथा रेखा और घाव ने लिखी है, जो कहती है:- जैन साहित्य में सती वसुधा को सर्वाधिक संत माना गया है, चंदनबल काणे में उनका कोई स्थान नहीं है। यह। महिवीर ने स्वयं नारी संघ को सर्वोच्च स्थान दिया था। हम वसुधा के विख्यात व्यक्तित्व, जो नारी स्वतंत्रता की बात करते हैं, कहते हैं वसुधा एक अहसास है। सीबीटी में, कोई भी महिला चाहे कैसी भी हो, वह कभी भी अपना प्यार नहीं खोती। आखिरकार, उसे अपने जीवन में सबसे पहले उसी पर निर्भर रहना पड़ता है। अगर कोई पुरुष ऐसी कविता लेता है, तो वह उसकी ओर आकर्षित होता है। यह एक मधुर खाद है। अगर आज़ादी चाहिए तो क्या यह पति-पत्नी को भी दी जा सकती है? वह आधुनिकता का अध्ययन करती हैं। पति-पत्नी के संबंध में ऐसी और ऐसी ही कई कहानियाँ अनोखे ढंग से प्रस्तुत की गई हैं।

'मेरी भावना हारो' भी पति-पत्नी की तर्ज पर ही आधारित है। उनकी सुंदर, ऊर्जावान, नैतिक और भाईचारे वाली रचनाएँ ही वह आधार हैं जिस पर उन्होंने अपनी जीवन कहानी कही है। पति की पत्नी को उसकी प्रेरणा के रूप में चित्रित किया गया है और दूसरी ओर, पुरुष की सफलता का रहस्य महिला को बताया गया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

घरौंदा ऐसा हर जगह है, महिला पति पर निर्भर है क्योंकि वह उसे यह रोटी देना चाहती है। लड़की पिता से प्यार करती है क्योंकि पिता उससे प्यार करता है, माँ... क्योंकि वह उसकी बेटी है और माँ और पिता भी लड़के से प्यार करते हैं क्योंकि वह उसका धन है। लड़के की बेटी... यह औरत की शाखा है... माँ को आँख कहना आदमी का गला घोंटना है। मैंने भारत रत्न में अध्ययन किया है, एक समय हाथ अंगों की तरह स्वतंत्र थे। प्रस्तुत ईद हरान महिला के जीवन की गति को प्रकट करता है।

निष्कर्ष

डॉ. रांगेय राघव ख्यातिप्राप्त उपन्यासकार है। वे भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के पक्षधर है। उन्हें नवीनता तथा आधुनिकता के नामपर अपनी सांस्कृतिक उपलब्धियों को नष्ट करना स्वीकार नहीं है। उन्होंने अतीत और वर्तमान दोनों को गहन दृष्टि से देखा और परखा है। आधुनिक युग की निरंतर बदलती परिस्थितियों के चित्रण से उनकी दूर दृष्टि का परिचय मिलता है । डॉ. रांगेय राघव ने विविध रूपा नारी का चित्रण किया है। इस चित्रण पर पूर्ववर्ती और समकालीन उपन्यासकारों का प्रभाव रहा है। डॉ. रांगेय राघव युग की नारी का विकास अनेक सोपानों को पार करने के बाद हुआ है। डॉ. रांगेय राघव पूर्व के युग में एक ओर जहाँ उपन्यासकारों का दृष्टिकोण निर्माणात्मक रहा हैं, वही दूसरी ओर उनका दृष्टिकोण विकासात्मक भी रहा है। नारी को तंत्र-मंत्र, तिलस्मी, जासूसी से मुक्त कर स्वस्थ चरित्र के निर्माण में प्रयत्नशील उपन्यासकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, किशोरीलाल गोस्वामी और बाल कृष्ण भट्ट प्रमुख है। इसी तरह व्यक्तित्व संपन्न विकसित नारी को चित्रित करनेवाले उपन्यासकारों में प्रेमचंद, प्रसाद और वृन्दावनलाल वर्मा आदि प्रमुख है ।

संदर्भ

1. अंधेरे के जुगनू डॉ. रांगेय राघव किताब महल १९५७ इलाहाबाद, बम्बई
2. अंधेरे की भूख डॉ. रांगेय राघव किताब महल १९५५ इलाहाबाद
3. आग की प्यास डॉ. रांगेय राघव सन्मार्ग प्रकाशन, १९७९ दिल्ली- ११०००७
4. आँधी की नींवे डॉ. रांगेय राघव आत्माराम एण्ड १९६१ सन्ज दिल्ली- ६

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

5. आखिरी आवाज डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज च.सं. १९६८ कश्मीरी गेट, दिल्ली

6. उबाल डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज द्वि.सं. १९७१ दिल्ली

7. कब तक पुकारूँ डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज च.सं. १९७१

8. कल्पना डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज पा.सं. १९७१

9. काका डॉ. रांगेय राघव आत्माराम एण्ड सन्ज १९६३

10. घरौंदा चीवर डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्न द्वि.स. १९६९ डॉ. रांगेय राघव शब्दकार दिल्ली १९७३

11. छोटी सी बात डॉ. रांगेय राघव अलीक प्रकाशन १९५१

12. जब आवेगी कालघटा डॉ. रांगेय राघव विनोद पुस्तक मन्दिर १६५८ हॉस्पिटल रोड, आगरा

13. दायरे डॉ. रांगेय राघव अलीक प्रकाशन १९६१

14. देवकी का बेटा डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज कश्मीरी गेट, दिल्ली १९७२

15. धरती मेरा घर डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज कश्मीरी गेट, दिल्ली च. स. १९७०

16. धूनी का धुआँ डॉ. रांगेय राघव राजकिशोर अग्रवाल १९५८ विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

17. पक्षी और आकाश डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज पी.सं. १९६८ दिल्ली

18. पथ का पाप डॉ. रांगेय राघव राजपाल एण्ड सन्ज द्वि.स. १९७०